तेईस

धर्मविधियाँ

The Sacraments

यीशु ने कलीसिया को केवल दो परम संस्कार दिये: पानी का बपतिस्मा (देखें मत्ती 28:19) और प्रभु भोज (देखें 1कुरि. 11:23-26)। हम सबसे पहले पानी के बपतिस्मे का अध्ययन करेंगे।

नई वाचा के अन्तर्गत, प्रत्येक विश्वासी को तीन भिन्न बपतिस्मों का अनुभव प्राप्त करना है। वे हैं: मसीह की देह में बपतिस्मा, पानी में बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा।

एक व्यक्ति के नये जन्म लेने पर वह यंत्रवत् रूप से मसीह की देह में बपतिस्मा ले लेता है। अर्थात् वह मसीह की देह, कलीसिया का एक सदस्य बन जाता है:

> एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया (1कुरि. 12:13, रोमि. 6:3, इफि. 1:22-23, कुलु. 1:18, 24 भी देखें)।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेना उद्धार के पश्चात् का अनुभव है, और यह बपतिस्मा प्रत्येक विश्वासी प्राप्त कर सकता है और उसे करना भी चाहिए।

अन्त में, प्रत्येक विश्वासी को पश्चात्ताप करने और प्रभु यीशु में विश्वास करने के एकदम पश्चात् ही जितना जल्द हो सके पानी में बपतिस्मा लेना चाहिए। बपतिस्मा नये विश्वासी की आज्ञाकारिता का पहला कार्य होना चाहिये।

> और उसने (यीशु ने) उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और *बपतिस्मा ले* उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मर 16:15-16, पर बल दिया गया है)।

प्रारम्भिक कलीसिया ने बपतिस्मा देने की यीशु की प्रतिज्ञा को बहुत महत्वपूर्ण माना था। बिना किसी अपवाद के परिवर्तितों को उनके परिवर्तन के एकदम पश्चात् ही बपतिस्मा दिया जाता था (देखें प्रेरित. 2:37-41; 8:12-16, 36-39, 9:17-19; 10:44-48; 16:31-33; 18:5-8; 19:1-5)।

बपतिस्मा के बारे में कुछ पवित्रशास्त्र विरोधी विचार

Some Unscriptural Ideas About Baptism

कुछ एक नये परिवर्तित पर पानी की कुछ बूदों को छिड़कने की विधि को बपतिस्मा मानते हैं। क्या यह सही है? नये नियम में अनुवादित शब्द *बपतिस्मा* यूनानी का *बेप्टिज़ों* शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ ''डूबना'' है। इसलिए पानी में बपतिस्मा लेने वाले को उसमें पूरी तरह से डूबना चाहिए, न कि कुछ बूंदों का छिड़काव लेना चाहिए। मसीही बपतिस्मा का प्रतीक, जिसका कुछ समय पश्चात् ही हम अध्ययन करेंगे, वह भी डुबकी के विचार का समर्थन करता है।

कुछ लोग शिशु का बपतिस्मा करते हैं, यद्यपि बाइबल में शिशु बपतिस्में का कहीं कोई उदाहरण नहीं मिलता। इस तरह की विधि का मूल एक झूठे सिद्धान्त ''बपतिस्मे का पुनरूत्पादन'' पर होता है—इस विचार के अनुसार एक व्यक्ति के बपतिस्मा लेने पर उसका नया जन्म हो जाता है। धर्मग्रंथ स्पष्ट रूप से सिखाता है कि लोगों को बपतिस्मा लेने से पहले सर्वप्रथम यीशु पर विश्वास करना है। अत: वे बच्चे जो इतने बड़े हैं कि पश्चात्ताप करने या यीशु का अनुसरण करने के योग्य हैं, बपतिस्मा लेने के लिए उपयुक्त हैं, लेकिन शिशु व छोटे बच्चे नहीं।

कुछ का सिखाना है कि, बेशक एक व्यक्ति यीशु पर विश्वास करता है, तौभी पानी का बपतिस्मा न लेने तक वह उद्धार नहीं पाता है। यह पवित्रशास्त्र के अनुसार सत्य नहीं है। प्रेरितों के काम 10:44-48 और 11:17 में हम पढ़ते हैं कि कुरनेलियुस के घराने ने पानी का बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार पाने के साथ-साथ पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लिया था। किसी भी व्यक्ति के लिए उद्धार पाने से पूर्व पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना असंभव है (देखें यूह. 14:17)।

कुछ सिखाते हैं कि जब तक एक व्यक्ति का उनके विशिष्ट सूत्र के द्वारा बपतिस्मा नहीं हो जाता, वह वास्तव में बचाया नहीं जाता। पवित्रशास्त्र उचित बपतिस्मे के लिए कोई विशिष्ट रीति रिवाज़ को नहीं देता। उदाहरण के लिए, कुछ का कहना है कि एक विश्वासी उस समय तक नहीं बचता जब तक कि वह ''पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में'' बपतिस्मा न ले ले (मत्ती 28:14), बजाय इसके कि यीशु के नाम में (प्रेरित. 8:16)। ये लोग उसी आत्मा की ओर इशारा करते हैं जिसका प्रभुत्व फरीसियों पर था, अर्थात् तिनके को छानना और ऊंट को निगल जाना। कितनी बड़ी त्रासदी है कि मसीही लोग बपतिस्मे के समय

में सही शब्दों के कहे जाने पर विवाद करते हैं जबकि संसार सुसमाचार सुनने की प्रतीक्षा में है।

बपतिस्मे का पवित्रशास्त्रीय प्रतीक

The Scriptural Symbolism of Baptism

पानी का बपतिस्मा उन कई चीज़ों का प्रतीक है जो कि पहले से नये विश्वासी के जीवन में घट चुकी हैं, सरल रूप में, यह प्रस्तुत करता है कि हमारे पाप धो दिये गए हैं, और अब हम परमेश्वर के सम्मुख शुद्ध होकर खड़े हैं। जब हनन्याह को शाऊल (पौलुस) के परिवर्तन के एकदम बाद भेजा गया था, उसने उससे कहा:

> अब क्यों देर करता है? उठ बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर *अपने पापों को धो डाल* (प्रेरित. 22:16, पर बल दिया गया है)।

दूसरा, पानी का बपतिस्मा हमारे मसीह में उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान का प्रतीक है। नया जन्म पाने और मसीह की देह में स्थान प्राप्त कर लेने के पश्चात् हमें परमेश्वर द्वारा ''मसीह में'' माना जाता है। चूंकि यीशु हमारा आदर्श था, अत: परमेश्वर के अनुसार यीशु ने यह सब हमारे लिये किया। अत: ''मसीह में'' हम मर गए, गाड़े गए और नये व्यक्तियों के रूप में जीवन बिताने को मृतकों में से जिलाए गए हैं:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपमिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें (रोमि. 6:3-4)।
>
> और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे (कुलु. 2:12)।

प्रत्येक नये विश्वासी को जल का बपतिस्मा देने पर इन महत्वपूर्ण सच्चाइयों को सिखाया जाना चाहिए, और उसके यीशु पर विश्वास करने के पश्चात् जितना जल्द हो सके उसका बपतिस्मा कराना चाहिए।

प्रभु भोज

The Lord's Supper

प्रभु भोज का उद्भव पुराने नियम के फसह पर्व से हुआ है। रात के समय जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था, उसने प्रत्येक घराने को एक वर्ष के मेमने का वध करने तथा उसके लहू को अपने द्वार के अलंगों और चौखटों

पर लगाने को कहा था। जब ''मृत्यु का दूत'' रात्रि के समय मिस्रियों के पहलौठों को मारते हुए गुज़रता, तब इस्राएलियों के घरों पर लहू को देखकर वह वहां से आगे गुज़र जाता।''

इसके अतिरिक्त, इस्राएलियों को उस रात्रि अपने फसह के मेमने को खाते हुए एक पर्व के रूप में मनाना था और उसी के साथ-साथ सात दिनों तक अखमीरी रोटी को खाते हुए भी। इस्राएल के लिए प्रति वर्ष इस समय को मनाना एक स्थायी अध्यादेश था (देखे निर्ग. 12:1-28)। निस्संदेह, फसह का मेमना मसीह की प्रस्तुति था, जिसे 1 कुरिन्थियों 5:7 में ''हमारा फसह'' कहा गया है।

जब यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की, तब वह और उसके शिष्य फसह पर्व को मना रहे थे। यीशु को फसह पर्व के समय में क्रूसित किया गया था, निश्चय ही उसकी इस बुलाहट को पूरा करते हुए ''परमेश्वर का मेमना जो जगत के पाप को उठा ले जाता है'' (यूह 1:29)।

जिस रोटी को हम खाते तथा जिस शर्बत को हम पीते हैं, वे यीशु की देह के प्रतीक हैं, जिसे हमारे लिये तोड़ा गया था, और लहू, जो हमारे पापों की माफी के लिए बहाया गया था:

> जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, ''लो, खाओं, यह मेरी देह है।'' फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, ''तुम सब इसमें से पीओ क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:26-29)

प्रेरित पौलुस ने कहानी को इस तरह से कहा:

> क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा, कि ''यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।'' सो इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, ''यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो'' (1कुरि. 11:23-26)।

कब और कैसे

When and How

धर्मग्रंथ हमें यह नहीं बताता कि प्रभु भोज में कैसे भागी होना है, लेकिन यह स्पष्ट है कि आरम्भिक कलीसिया में गृह कलीसियाई सभाओं में इसे पूर्ण भोज के रूप में नियमित किया जाता था (देखें 1कुरि. 11:20-34)। चूंकि प्रभु भोज फसह के पर्व से जुड़ा है, और आरम्भिक कलीसिया के द्वारा पूर्ण भोज के रूप में खाया जाता था, इसी तरह से इसे आज भी किया जाना चाहिए। आज भी बहुत सी कलीसियाएं ''मनुष्यों की परम्परा'' के अनुसार चल रही हैं।

हमें पवित्र भय के साथ प्रभु भोज में आना चाहिए। प्रेरित पौलुस ने बताया कि प्रभु भोज में अनुचित तरीके से भाग लेना एक गंभीर अपराध है:

> इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। यदि हम अपने आप को जांचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें (1कुरि. 11:27-32)

हमें प्रभु भोज में भाग लेने से पूर्व स्वयं की जांच करने को कहा गया है, और यदि हम स्वयं में कोई पाप पाते हैं तो हमें उसका अंगीकार व पश्चात्ताप करने की ज़रूरत है। अन्यथा हम ''देह और प्रभु के लहू'' के दोषी होंगे।

क्योंकि हमें पापों से स्वतंत्र कराने को यीशु मारा गया और उसने अपना लहू भी बहाया, अत: हम निश्चय ही उन सब कामों में भागी होना नहीं चाहते हैं जो उसकी देह और लहू के विरोध में हैं। ऐसा न करने पर हम इसे खाकर और पीकर अपने ऊपर बीमारी और पूर्वकालिक मृत्यु को लाने के द्वारा न्याय ला सकते हैं, जैसा कुरिन्थ के मसीहियों ने किया था। परमेश्वर के अनुशासन से बचने का तरीका स्वयं का न्याय करना है, अर्थात्, अपने पापों को स्वीकारना और पश्चात्ताप करना।

कुरिन्थ के मसीहियों का प्राथमिक पाप उनमें प्रेम का अभाव था। वे एक दूसरे से झगड़ रहे थे। उनकी एक दूसरे की चिंता करने की कमी उस समय में भी दिखती थी जब प्रभु भोज के समय में कुछ तो खा लेते थे और कुछ भूखे ही चले जाते थे, तथा कुछ पिये हुए भी होते थे (देखें 1कुरि. 11:20-22)।

जिस रोटी को हम खाते हैं वह मसीह की देह को प्रस्तुत करती है, जो अब कलीसिया

है। एक रोटी के भागी होते हुए, हम एक देह में अपनी एकता का प्रस्तुतीकरण करते है (देखें 1कुरि. 10:17)। इस तरह से भाग लेना कितना अपराधपूर्ण होगा जो मसीह की देह में दूसरे सदस्यों के साथ झगड़े और असंगति को दिखाता है। प्रभु भोज में भाग लेने से पूर्व, हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि मसीह में हमारे भाई बहनों के साथ हमारे संबंध सही हैं या नहीं।